eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 06, June 2024

लखनऊ जिले में स्थित स्ववित्तपोषित डी०एल०एड० प्रशिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत प्रशिक्षार्थियों की समस्याओं का अध्ययन

प्रेमांशु भरद्वाज[1]
[1]शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग, गौतम बुद्ध डिग्री कॉलेज, लखनऊ, उ०प्र०

Received: 15 June 2024 Accepted & Reviewed: 25 June 2024, Published : 30 June 2024

Abstract

शिक्षा के द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का अधिकतम विकास करके उसके ज्ञान, बोध, कौशल में वृद्धि की जाती है। शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति के व्यवहार को परिमार्जित, सभ्य व सुसंस्कृत बनाकर उसे समाज व राष्ट्र का एक उपयोगी नागरिक बनाया जाता है। शिक्षा की यह प्रक्रिया जन्म से प्रारम्भ होकर मृत्युपर्यन्त तक लगातार किसी न किसी रुप में सतत प्रक्रिया के रुप में सदैव चलती रहती है। स्ववित्तपोषित अवधारणा का विकास एक ओर जहाँ केन्द्र एवं राज्य सरकारों के वित्तीय दबावों से मुक्त करता है, वहीं दूसरी ओर भारत में लोकतंत्रात्मक शिक्षा प्रणाली के उद्देश्य को पूर्ण करने में भी सहायता प्रदान करता है। शोध का उद्देश्य प्रशिक्षार्थियों की स्ववित्तपोषित संस्थानों में उपस्थित भौतिक, वित्तीय एवं अधिगम संबंधित समस्याओं का अध्ययन करना है।

शोध अध्ययन में न्यादर्श के रूप में 50 प्रशिक्षार्थियों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि से किया गया है। स्ववित्तपोषित डी०एल०एड० संस्थानों के प्रशिक्षार्थियों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है जिसमें छात्र एवं छात्राओं की समस्याओं के प्रति सकारात्मक विचार पाए गए हैं।

मुख्य शब्द– भारत की लोकतंत्रात्मक शिक्षा प्रणाली, स्ववित्तपोषित डी०एल०एड० संस्थान, प्रशिक्षार्थी, समस्या

Introduction

शिक्षा मानव विकास की प्रथम श्रृंखला है जो कि व्यक्ति को परिपूर्ण बनाती है। वैसे तो शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है तथा इसका प्रारम्भ बालक के जन्म के साथ शुरु हो जाता है किन्तु जैसे–जैसे बालक वृद्धि करता है और आगे की ओर अग्रसर होता है तो उसके सामने अनेक प्रकार की समस्याएं आती है। प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने वाले शिक्षक पूर्ण प्रशिक्षित एवं अपने कार्य के प्रति उत्साही एवं समर्पित हो। अतः यह आवश्यक है कि इस कार्य हेतु सुयोग्य अभ्यर्थियों का चयन उचित प्रकार से किया जाय तथा उनके कार्य सम्पादन हेतु उचित शिक्षक – प्रशिक्षण प्रदान करके इस योग्य बनाया जाये कि वे अपने दायित्वों का निर्वहन सफलतापूर्वक कर सके।

इसके लिए इन प्रशिक्षकों को उपयुक्त अकादमिक एवं अन्य संसाधन उपलब्ध कराने की आवश्यकता है जो उनके प्रशिक्षण, मार्गदर्शन एवं उचित शैक्षिक परामर्श के माध्यम से सम्भव है। अतः राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) के प्रावधानों के अन्तर्गत भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा सम्पूर्ण देश में राज्य स्तर पर प्रत्येक जिले में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों (DIET) की स्थापना की गयी।

इन संस्थानों की स्थापना विशेष रूप से प्राथमिक शिक्षकों को द्विवर्षीय सेवा पूर्ण प्रशिक्षण (नियमित डी०एल०एड०) तथा कार्यरत शिक्षकों को सेवाकालीन प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। इसके अतिरिक्त विशिष्ट बी०टी०सी०, शिक्षामित्रों का प्रशिक्षण एवं अनुदेशकों का प्रशिक्षण डायट में प्रदान किया जाता है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 06, June 2024

शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो मनुष्य की जन्मजात शक्तियों के स्वाभाविक और सामंजस्यपूर्ण विकास मे योगदान देती है। व्यक्ति की वैयक्तिकता का पूर्ण विकास करती है। वातावरण से सामंजस्य स्थापित करने में सहायता करती है उसे जीवन के कर्तव्यों और दायित्वों के लिए तैयार करती है। यह नागरिकों के व्यवहार, विचार और दृष्टिकोण मे ऐसा परिवर्तन करती है जो विश्व के लिए हितकर होता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अन्तर्गत स्वतन्त्रता के पश्चात अनुभव किया गया कि प्राथमिक शिक्षा देश की समस्त शैक्षिक संरचना की नींव है और यदि नींव ही कमजोर होगी तो उस पर स्थित शिक्षा रूपी भवन दीर्घायु प्राप्त नहीं कर सकता है। यही कारण रहा है कि संविधान में भी इस सम्बन्ध में राज्यों को स्पष्ट निर्देश दिए गए हैं। केन्द्र सरकार ने अपनी जागरूकता के चलते 1976 के संविधान संशोधन के तहत इसे समवर्ती सूची के अन्तर्गत कर लिया है लेकिन इसकी ठोस वित्तीय और प्रशासनिक जरूरतों के कारण केन्द्र और राज्य सरकारों के बीच उत्तरदायित्वो का बँटवारा आवश्यक हो गया है। यह नीति प्राथमिक शिक्षा में अधिक निवेश करने पर जोर देती है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

किसी भी विषय में निहित परिणाम को जानने के लिए उस विषय का अध्ययन काफी आवश्यक होता है। अध्ययन द्वारा किसी विषय में निहित सकारात्मक तथा नकारात्मक परिणाम को जानने के साथ–साथ विषय से सम्बन्धित सुझाव दिये जा सकते हैं तथा भविष्य में कितना उपयोगी बन सकता है इसका भी अनुमान लगाया जा सकता है। स्ववित्तपोषित अवधारणा का विकास एक ओर जहाँ केन्द्र एवं राज्य सरकारों के वित्तीय दबावों से मुक्त करता है, वहीं दूसरी ओर भारत में लोकतंत्रात्मक शिक्षा प्रणाली के उद्देश्य को पूर्ण करने में भी सहायता प्रदान करता है। किसी भी विषय में निहित परिणाम को जानने के लिए उस विषय का अध्ययन काफी आवश्यक होता है।

अध्ययन द्वारा किसी विषय में निहित सकारात्मक तथा नकारात्मक परिणाम को जानने के साथ–साथ विषय से सम्बन्धित सुझाव दिये जा सकते हैं तथा भविष्य में कितना उपयोगी बन सकता है इसका भी अनुमान लगाया जा सकता है। स्ववित्तपोषित डी०एल०एड० (पूर्व नाम बी०टी०सी०) शिक्षण प्रशिक्षण संस्थानों में मानकों का कितना ध्यान रखते हैं और क्या इससे शिक्षा की गुणवत्ता भी प्रभावित होती है ? स्ववित्तपोषित डी०एल०एड० संस्थानों में प्रत्यक्ष रुप से पायी जाने वाली विभिन्न प्रकार की समस्याओं जैसे भौतिक संसाधन सम्बंधी समस्यायें, वित्त संसाधन सम्बंधी समस्यायें और अधिगम संसाधन सम्बंधी समस्यायें आदि का सामना करना पड़ता है।

अतः प्रस्तुत अध्ययन स्ववित्तपोषित शिक्षण संस्थानों के सुचारू कार्य संचालन हेतु यह आवश्यक है कि इनकी समस्याओं का अध्ययन करके समाधान खोजने का प्रयास किया जाये।

1997 से सरकार ने नये उच्च शिक्षा संस्थाओं को अनुदान देना बन्द कर दिया है तथा स्थानीय लोगो को निजी संस्थाये खोलने हेतु प्रोत्साहित कर रही हैं। इन संस्थाओं की फीस सरकारी डायट की अपेक्षा अधिक है जिससे लोगों को निजी संस्थाओं को खोलने में लाभ नजर आ रहा है। परिणाम स्वरुप स्ववित्तपोषित डी०एल०एड० संस्थाओं की सं० में अतितीव्र गति से वृद्धि हो रही है और इन स्ववित्तपोषित संस्थाओं की संख्या में तीव्र वृद्धि गुणवत्तापरक शिक्षा पर एक बड़ा प्रश्न चिन्ह लगा रही है। किसी भी देश की शिक्षा की गुणवत्ता उस देश की उत्पादकता, समृद्धि और आर्थिक विकास की दर बताती है। संस्थानों का एक उत्तम ढंग से नियमन एवं प्रबन्धन हो ताकि स्ववित्तपोषित डी०एल०एड० संस्थान अपने मार्ग से भटक न जाय और

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 06, June 2024

यह केवल लाभ कमाने का एक साधन मात्र न बन जाय। गुणवत्ता शिक्षा का अपरिवर्तित लक्ष्य है परन्तु लाभ से प्रेरित स्ववित्तपोषित डी०एल०एड० संस्थाओं के कारण ये प्रभावित हो रही है अगर इन संस्थानों के प्रति सजग नहीं रहा गया तो गुणवत्ता प्रभावित होगी जिसकी क्षतिपूर्ति भविष्य में असाध्य है।

समस्या कथन

"लखनऊ जिले में स्थित स्ववित्तपोषित डी०एल०एड० प्रशिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत प्रशिक्षार्थियों की समस्याओं का अध्ययन। "

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत लघु शोध के लिए निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं–

1. स्ववित्तपोषित डी०एल०एड० प्रशिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत छात्र प्रशिक्षु की भौतिक, वित्तीय तथा अधिगम संसाधनों से सम्बन्धित समस्याओं का अध्ययन करना।

2. स्ववित्तपोषित डी०एल०एड० प्रशिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत छात्राओं की भौतिक, वित्तीय तथा अधिगम संसाधनों से सम्बन्धित समस्याओं का अध्ययन करना।

3. स्ववित्तपोषित डी०एल०एड० प्रशिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं प्रशिक्षार्थियों की भौतिक, वित्तीय तथा अधिगम संसाधनों से सम्बन्धित समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना

लखनऊ जिले में स्थित स्ववित्तपोषित डी०एल०एड० प्रशिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत प्रशिक्षार्थियों की भौतिक, वित्तीय तथा अधिगम संसाधनों से सम्बन्धित समस्या के प्रति कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

अध्ययन का परिसीमांकन

समस्या के परिणाम प्राप्त करने के लिए उसकी सीमा को निश्चित करना आवश्यक होता है क्योंकि विविध दृष्टिकोण वाले विषयों को सम्मिलित करना असम्भव तो नहीं किन्तु कठिन अवश्य हो जाता है। शोधकर्ता ने सभी विचारों को ध्यान में रखते हुए अपनी समस्या " लखनऊ जिले में स्थित स्ववित्तपोषित डी०एल०एड० प्रशिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत प्रशिक्षार्थियों की समस्याओं का अध्ययन। " के लिए निम्नलिखित सीमाओं को निश्चित किया है।

प्रस्तुत शोध की सीमाएं इस प्रकार हैं –

1. प्रस्तुत शोध में आंकड़ों का संग्रहण केवल लखनऊ जिले के शहरी क्षेत्रों से किया गया है।

2. प्रस्तुत शोध में स्ववित्तपोषित डी०एल०एड० संस्थाओं में अध्ययनरत प्रशिक्षार्थियों की विभिन्न समस्याओं में से केवल भौतिक संसाधन सम्बंधी समस्या, वित्तीय संसाधन सम्बंधी समस्या एवं अधिगम संसाधन सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन किया गया है ।

अनुसंधान विधि

प्रस्तुत शोध वर्तमान परिस्थिति को इंगित करती है तथा इस शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। अनुसंधान प्रणालियों में सर्वेक्षण विधि का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। सर्वेक्षण किसी क्षेत्र, समूह

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 06, June 2024

या संस्था की वर्तमान स्थिति को जानने, विश्लेषित करने, व्याख्या करने तथा प्रतिवेदन करने का एक सुनियोजित प्रयास है। सर्वेक्षण से तात्पर्य ऐसी अनुसंधान प्रणाली से है जिसमें अनुसंधानकर्ता घटनास्थल पर जाकर किसी विशेष घटना का वैज्ञानिक निरीक्षण करता है तथा उसके सम्बन्ध में खोज करता है। सीमित समय में शोध के लिए सर्वेक्षण विधि ही सर्वोपरि मानी जाती है।

जनसंख्या

शोधकर्ता ने प्रस्तुत लघु शोध के अंतर्गत लखनऊ जिले में स्थित समस्त स्ववित्तपोषित डी०एल०एड० संस्थानों में अध्ययनरत समस्त प्रशिक्षार्थियों को जनसंख्या में सम्मिलित किया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए न्यादर्श के रूप में उत्तर प्रदेश राज्य के लखनऊ जनपद के 5 स्ववित्तपोषित डी०एल०एड० संस्थाओं का चयन दिशाओं के माध्यम से किया गया है एवं इन 5 संस्थाओं में अध्ययनरत 50 प्रशिक्षार्थियों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि से किया गया है।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

लखनऊ जिले में स्थित स्ववित्तपोषित डी०एल०एड० प्रशिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत प्रशिक्षार्थियों की समस्याओं को ज्ञात करने के लिए स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

आँकड़ों का संग्रहीकरण एवं प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ

प्रस्तुत शोध में प्रदत्तो के संकलन हेतु चयनित 5 स्ववित्तपोषित डी०एल०एड० प्रशिक्षण संस्थान के संस्था प्रमुख से अनुमति प्राप्तकर प्रशिक्षार्थियों से सम्पर्क किया गया तथा उन्हें अपने इस कार्य से अवगत कराया एवं इस सर्वेक्षण के सम्बंध में विस्तृत जानकारी प्रदान की। प्रशिक्षार्थियों से सहयोग प्राप्त करने के लिए उन्हें पूर्ण रूप से तैयार किया तद्पश्चात उनको स्वनिर्मित प्रश्नावली प्रदान किया व आग्रह किया कि वह प्रत्येक कथन के प्रति पूर्ण ईमानदारी से उत्तर दें तथा यह विश्वास रखे कि आपके उत्तर व राय पूर्ण रूप से गोपनीय रखे जायेंगे। इसी प्रकार अलग–अलग कार्य दिवसों में शोधकर्ता ने अलग–अलग समस्त चयनित संस्थाओं में जाकर अध्ययन समस्या से सम्बन्धित उपकरण का प्रयोग किया। अध्ययन में प्रयुक्त की जाने वाली सांख्यिकीय विधियों के अंतर्गत मध्यमान, मानक विचलन तथा टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

विश्लेषण व्याख्या एवं परिणाम

परिकल्पना क्रमांक – 01

स्ववित्तपोषित डी०एल०एड० प्रशिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की भौतिक, वित्तीय एवं शिक्षण अधिगम सम्बन्धी समस्याओं में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

सारणी क्रमांक – 01

लखनऊ जिले में स्थित स्ववित्तपोषित डी०एल०एड० प्रशिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की समस्याओं सम्बन्धी प्राप्तांकों का सांख्यिकीय विश्लेषण

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 06, June 2024

समूह परीक्षण	छात्रों की संख्या (N)	माध्य (M)	प्रामाणिक विचलन मान (S.D.)	स्वतंत्रता का अंश Degree Of Freedom (D.F.)	टी-मान (t-Value)	सार्थकता स्तर (Level Of Significance)	परिकल्पना स्वीकृत / अस्वीकृत
संस्था में अध्ययनरत छात्र की समस्याओं का विश्लेषण	25	97.40	13	48	0.73	0.05	परिकल्पना स्वीकृत
संस्था में अध्ययनरत छात्राओं की समस्याओं का विश्लेषण	25	94.20	17.6				

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि संस्थाओं में अध्ययनरत छात्र प्रशिक्षु की समस्या का मध्यमान 97.40 एवं मानक विचलन 13 है। संस्थाओं में अध्ययनरत छात्राओं की समस्या का मध्यमान 94.20 तथा मानक विचलन 17.6 पाया गया। लखनऊ जिले में स्थित स्ववित्तपोषित डी०एल०एड० प्रशिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत प्रशिक्षार्थियों की समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन करने पर अन्तर की सार्थकता की जांच के लिए ज – परीक्षण किया गया। जहाँ दोनों समूहों के मध्य ज का मान D- F- (स्वतंत्रता का अंश) 48 पर 0.73 है जो कि टी के सारणी मान 2.01 से कम है। अतः इस स्तर पर यह परिकल्पना स्वीकार की जाती है। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि स्ववित्तपोषित डी०एल०एड० प्रशिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की भौतिक, वित्तीय एवं शिक्षण अधिगम सम्बन्धी समस्याओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन निष्कर्ष – प्रस्तुत लघु शोध हेतु संकलित आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए –

1. स्ववित्तपोषित डी०एल०एड० प्रशिक्षण संस्थान के छात्र एवं छात्रा प्रशिक्षार्थियों को भौतिक संसाधनों में छात्रावास सम्बन्धी, खेल की आवश्यक सामान उपलब्धता, पाठ्य सहगामी क्रियाओं के लिए अलग–अलग कक्ष, उपकरणों एवं चिकित्सा सम्बन्धी समस्याओं के प्रति सकारात्मक विचार पाए गए हैं।

2. स्ववित्तपोषित डी०एल०एड० प्रशिक्षण संस्थान के छात्र एवं छात्रा प्रशिक्षार्थियों को वित्तीय संसाधन सम्बन्धी समस्या में मुख्यतः संस्थान द्वारा प्रशिक्षार्थियों को सम्पूर्ण शुल्क की रसीद प्रदान न करने, सरकार द्वारा निर्धारित शुल्क से अधिक शुल्क लेने तथा मुख्य परीक्षाओं में शुल्क लेने आदि वित्तीय समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

3. स्ववित्तपोषित डी०एल०एड० प्रशिक्षण संस्थाओं के छात्र एवं छात्रा प्रशिक्षार्थियों को अधिगम सम्बन्धी समस्याओं में मुख्यतः शैक्षिक अवलोकन, शैक्षिक संगोष्ठियाँ, साहित्यिक गतिविधियाँ, वाद–विवाद

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 06, June 2024

प्रतियोगिताओं का ससमय संचालन न करने से अधिगम सम्बन्धी समस्याओं के प्रति सकारात्मक विचार पाए गए हैं।

सुझाव – स्ववित्तपोषित प्रशिक्षण संस्थाओं के लिए निम्नलिखित सुझाव दिये जा सकते हैं–

प्रशिक्षण संस्थाएं प्रशिक्षार्थियों की सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए प्रशिक्षण संस्थाओं का निर्माण स्वच्छ वातावरण तथा पर्याप्त संसाधन को ध्यान में रख कर करवाएं।

शिक्षा में गुणवत्ता लाने के लिए विशेष शिक्षकों की नियुक्ति करें तथा समय–समय पर शिक्षकों के कार्य का परिवीक्षण भी करवाते रहें।

संस्थान में समय – समय पर ज्ञानवर्द्धक प्रतियोगिताएं, वाद–विवाद प्रतियोगिताएं करा–कर प्रशिक्षार्थियों के ज्ञान में वृद्धि कर सकते हैं।

प्रशिक्षार्थियों के अधिगम मूल्यांकन के लिये समय–समय पर परीक्षाओं का आयोजन करवाया जा सकता है।

आगामी शोध कार्य हेतु सुझाव –

प्रस्तुत अध्ययन में 50 का न्यादर्श लिया गया है अधिक प्रमाणिक परिणाम के लिए अधिक बड़े न्यादर्श को लेकर अनुसंधान कार्य किया जा सकता है।

विभिन्न जिलों के डायट एवं स्ववित्तपोषित डी०एल०एड० के प्रशिक्षार्थियों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है

अध्ययन हेतु प्रयुक्त उपकरणों की वैधता, विश्वसनीयता एवं मानक ज्ञात करके उपकरणों का मानकीकरण किया जा सकता है।

स्ववित्तपोषित डी०एल०एड० एवं डायट डी०एल०एड० के गुणात्मक उन्नयन हेतु एक विस्तृत शैक्षिक कार्यक्रम की योजना का निर्माण किया जा सकता है।

विभिन्न स्ववित्तपोषित डी०एल०एड० संस्थाओं में उपलब्ध सुविधाओं, सीमाओं एवं आवश्यकताओं का अध्ययन किया जा सकता हैं।

प्रस्तुत अध्ययन का शैक्षिक निहितार्थ–

प्रस्तुत अध्ययन का विषय आज जबकि शिक्षा का इतना विकेन्द्रीकरण हो रहा है ऐसे समय में प्रशिक्षार्थी अपनी किन–किन आवश्यकताओं का पूरा करना चाहता है तथा वह कैसे स्ववित्तपोषित प्रशिक्षण संस्थाओं में कुछ सुधार चाहता है। इसको प्रस्तुत किया गया है। स्ववित्तपोषित प्रशिक्षण संस्थान आज शिक्षा के पर्याय बनते जा रहे हैं प्रस्तुत अध्ययन के माध्यम से शोधकर्ता ने स्ववित्तपोषित प्रशिक्षण संस्थाओं की गुणवत्ता सुधार को अपना लक्ष्य बनाकर कार्य किया है क्योंकि प्रशिक्षण संस्थाएं प्रशिक्षार्थियों के लिए एक मंच प्रदान करते हैं जहां से वह अपने जीवन की वास्तविक यात्रा की ओर आगे बढ़ता है।

वर्तमान परिदृश्य को देखते हुए स्ववित्तपोषित प्रशिक्षण संस्थाओं के अस्तित्व को नकारा नहीं जा सकता परन्तु आज स्ववित्तपोषित प्रशिक्षण संस्थाएं एक उत्पादक फैक्ट्री का कार्य कर रहे हैं जिसमें मुनाफा प्रमुख प्राथमिकता है गुणवत्ता को गौण स्थान दिया जा रहा है। ऐसे में प्रशिक्षार्थी डिग्री तो प्राप्त कर रहे हैं पर

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 06, June 2024

ज्ञान नहीं। हम वर्षों से बाल केन्द्रित शिक्षा की बात करते हैं इसे ही हमें आगे बढ़ाना होगा और शिक्षा को शिक्षा के उद्देश्यों की ओर ले जाना होगा अर्थात शिक्षा तो सभी ले रहे हैं परन्तु जिस शिक्षित समाज, राज्य और राष्ट्र की कल्पना हमारे विद्वान करते रहे उस मार्ग से शिक्षा पथ भ्रमित हो रही है। जिसे आज की युवा पीढ़ी को समझना है क्योंकि शिक्षा का उद्देश्य संसाधन निर्मित करना ही नहीं बल्कि एक कुशल मानव का विकास करना है जो विवेक, समय, सक्षमता, विद्वता आत्म विश्वास से भरा हो।

प्रस्तुत शोध के माध्यम से शोधकर्ता ने यह भी प्रयास किया है कि प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रबन्धक प्रशिक्षार्थियों की अपेक्षाओं को समझे और राष्ट्र हित के लिए अपना योगदान दें। इसलिए शोधकर्ता ने भौतिक, वित्तीय एवं अधिगम सम्बन्धी क्रियाओं से सम्बन्धित क्रम के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया कि जो प्रशिक्षण संस्थाएं नियमों, मानकों का पालन नहीं कर रहे हैं ऐसे लक्ष्य से इतर प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रशिक्षार्थियों को कैसा वातावरण मिल रहा है तथा वे वास्तविक स्थिति को लेकर इन शिक्षा संस्थाओं के प्रति अपनी क्या अभिवृत्ति बना रहे हैं। बढ़ती जनसंख्या के कारण निजीकरण हमारे सामाजिक परिवेश का अभिन्न अंग बन गया है। इसलिए स्ववित्तपोषित प्रशिक्षण संस्थाओं को यह प्रयास करना होगा कि वे प्रशिक्षार्थियों को गुणवत्ता युक्त संसाधन प्रदान कराएं ताकि प्रशिक्षार्थी की सकारात्मक अभिवृत्ति बन सके और वे आत्म विश्वास के साथ अपने कार्य का निष्पादन कर सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. सिंह, एन० (1981), " गुजरात और गोरखपुर विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालयों की प्रशासनिक समस्याओं का अध्ययन ", लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
2. कपिल, एच०के० (2004), " अनुसंधान विधियाँ ", एच०जी० भार्गव बुक हाउस, आगरा।
3. साहू, ए० (2009)," स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के प्रति छात्रों की अभिवृत्ति का अध्ययन ", लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
4. भगत, एस० (2009), " लखनऊ विश्वविद्यालय मे स्ववित्तपोषित पाठ्यक्रमों की आवश्यकता क्रियान्वयन की चुनौतियां और भविष्य एक अध्ययन " लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
5. वर्मा, ए० (2019), " सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा एक चुनौती पूर्ण उत्तरदायित्व ", भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका।
6. मंगल, एस० के० – मंगल, एस०(2021), " व्यवहारिक विज्ञानों में अनुसंधान विधियाँ", PHI Learning Private Limited, नई दिल्ली।